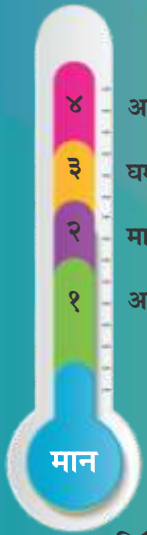


अक्रम यूथ

मई २०१७ | हिन्दी

दादा भगवान परिवार

₹ १२



- ४ अकडू
- ३ घमंडी
- २ मान में कपट
- १ अभिमान

मानोमीटर



मान



अनुक्रमणिका

४

मान के प्रकार

६

AkrampediA

८

महान पुरुषों की झांकियाँ

१०

Q & A

१२

ज्ञानी विद यूथ

१४

चापलूसी

१७

ज्ञानी की वैज्ञानिक दृष्टि से...

१८

अपमान - सफलता की सीढ़ी के तौर पर

२१

युवा - २०१७ अमरेली

२२

चेलेन्ज

२३

चलो खेलें

संपादक : डिम्पल मेहता
वर्ष : ५, अंक : १
अखंड क्रमांक : ४९
मई २०१७

संपर्क सूत्र :
ज्ञानी की छाया में,
त्रिमंदिर संकुल, सीमंधर सिटी,
अहमदाबाद-कलोल हाइवे,
मु.पां. - अडालज,
जिला : गांधीनगर-३८२४२१, गुजरात
फोन : (०७९) ३९८३०१००
email: akramyouth@dadabhagwan.org
website: youth.dadabhagwan.org

Printed & Published by
Dimple Mehta on behalf of
Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj -
382421. Dist- Gandhinagar

Owned by
Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj -
382421. Dist- Gandhinagar

Printed at
Amba Offset
B-99, K6 Road, Electronics GIDC, Sector 25,
Gandhinagar - 382044, Gujarat, India

Published at
Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj -
382421. Dist- Gandhinagar
कुल २४ पेज कवर पेज सहित

सदस्यता शुल्क

वार्षिक

भारत : १२५ रुपए
यू.एस.ए. : १५ डॉलर
यू.के. : १० पाउन्ड

पाँच वर्ष

भारत : ५०० रुपए
यू.एस.ए. : ६० डॉलर
यू.के. : ४० पाउन्ड

D.D/M.O. महाविदेह फाउन्डेशन कं
नाम पर भेजें।



You need to download QR Code Scanner App from Play store or iTunes Store

Visit : <http://youth.dadabhagwan.org/Gallery/Akram-Youth>

Download free ebook / PDF versions of all
Akram Youth issues by scanning this QR code



संपादकीय

“जगत् में अगर मान नहीं होता, तो यहीं मोक्ष होता।” - श्रीमद् राजचंद्र का यह प्रसिद्ध वाक्य इस बात का सबूत है कि, “मान” ही हमारे दैनिक जीवन की समस्याओं एवं तनाव का मुख्य कारण है। सभी ज्ञानीपुरुषों का मत एक सरीखा ही रहता है। इसीलिए दादाश्री ने भी कहीं कहा है कि, “अपमान” विटामिन है, जबकि “मान” खुराक है।

“मान” कई प्रकार का होता है। चलो, मान और उसके विविध प्रकार के बारे में विस्तार से जानें। साथ ही श्रीमद् जी के जीवन के अनुभवों से यह भी सीखें कि मान किस तरह से हमारे विकास में अवरोध डालता है।

यह तो तय हो गया कि मान गलत है, तो चलो प्योरिटी से (शुद्धता से) जगत् कल्याण के मार्ग पर चलें। दादाश्री ने जगत् कल्याण में प्योरिटी के लिए - विषय, मान और लक्ष्मी की प्योरिटी पर खास तौर से महत्व दिया है।

चलो, प्योर कैसे हो सकते हैं, वह सीखें।

जीवन में हर कदम पर बुद्धि हमेशा फायदा और

नुकसान दिखाती रहती है। ज्यादातर हर एक की यही मान्यता रहती है कि, व्यवहार में खुद की इज्जत-मान बढ़े वही फायदेमंद है। जबकि दादाश्री कहते हैं कि, “अपमान ही सिर्फ ऐसा है, जो बहुत फायदेमंद है।” मान और अपमान, अहंकार के मीठे और कड़वे रस हैं। कई लोगों ने सफलता प्राप्त करने के लिए जीवन में अपमान सहन किया और श्रेष्ठता प्राप्त करने की सीढ़ी के रूप में उसका उपयोग किया। रतनटाटा और माइकल जोर्डन के अनुभवों को पढ़कर हम अपने साथ होने वाले अपमान से और भी मज़बूत बनेंगे और परिस्थितियों का मुकाबला करना सीखेंगे।

तो चलो, मज़बूत बनने का निश्चय करें। चलो, मान-अपमान होने के कारणों को समझें और भविष्य में कषाय रहित और शांति से भरपूर श्रेष्ठ जीवन की समझ प्राप्त करें।

-डिम्पल मेहता

मान के प्रकार

एक सहज अहंकार होता है। अपनी पहचान बताने वाला। अपने गुणों को दर्शाने वाला, जैसे कि कोई “ग्रेज्युएट हूँ” इतना ही कहता है। सिर्फ वही, अपने जो गुण हैं, उतना ही सीमित मान। वह स्वमान है। सहज अहंकार उपयोगिता दर्शाने वाला होना चाहिए।

लेकिन फिर वह - “मैं कुछ विशेष हूँ” ऐसे और अन्य विविध प्रकारों से आगे बढ़ता है।

१) अभिमान - अपने आप को मान से संबोधित करता है। तू कौन? तो कहेगा, “लल्लु भाई वकील” नाम के साथ इज्जत और पद को जोड़ता है। इसमें ममता शामिल है। साधन-संपत्ति जुड़े हुए हैं। कहेगा, “यह मेरा घर, बंगला, मोटर, ज़मीन, संपत्ति” वगैरह। अब जो “मेरेपन” में गया वह “अभिमानी” हो गया। “महंगी चीज़ों का मान” - सोने की घड़ी, नए फ्रेम वाले चश्मे वगैरह का दिखावा करता रहता है। शो ऑफ करता है। कई लोग गुप में ज़ोर से कहते हैं, “जय सच्चिदानंद”। सब का ध्यान अपनी ओर खींचने के उद्देश्य से। आरती चल रही हो तो कूदकर बीच में आरती लेने आता है। यह एक प्रकार का चीप (हल्का) मान कहलाता है कि जो अन्य लोगों का अटेनशन पाना चाहता है।

इन साधु - सन्यासियों के पास चीज़ें नहीं होती, फिर भी शास्त्रों के अध्ययन का, अपने संप्रदाय का, शिष्यों की संख्या बढ़ाने का ज़बरदस्त अहंकार रहता है।

मान के पर्याय बहुत हैं। बहुत “मान” मिले, वह एक प्रकार की भूख है। “मैं कुछ हूँ” ऐसा सभी को दिखा देने की प्रबल इच्छा। खास तौर पर जिसे बचपन में “मान” न मिला हो या अवगणना हुई हो तो वह बड़ा होने के बाद बहुत मानी बन जाता है। उसे ऐसा लगता है कि सब से आगे रहना है। मान मिले तो

चखो, लेकिन उसकी आदत मत डालना। मान खाने की आदत नहीं होनी चाहिए। मान देने वाले पर राग नहीं होना चाहिए, वर्ना अपमान मिलेगा और फिर वह नीचे ले जाएगा।

२) मान में कपट - मान में फिर विकृतियाँ खड़ी हो जाती हैं, मान खाने के लिए कपट करता है। गुप फोटो खींच रहे हों तो जल्दी से आगे आ जाता है। अच्छा दिखने के लिए बालों को डाई करता है। खुद को विशेष मान चाहिए। किसी आमंत्रण में आग्रह कम महसूस करे तो खाना खाने नहीं जाता। औरों के बजाय जैसे खुद ज्यादा सुखी है, ऐसा दिखावा करता है। मान प्राप्त करने के लिए दान देता है। अपने नाम की तख्ती लगवाता है।

३) घमंडी - कभी किसी ओहदे वाली पर्सनैलिटी वाले व्यक्ति का व्यवहार देखा है! इन्जीनियर या कलेक्टर। ये सभी ऑफिसर कठोर स्वभाव वाले होते हैं। जहाँ जाते हैं वहाँ सभी को परेशान कर देते हैं।

बहुत तुनकमिजाज़ होते हैं। ऐसे बहुत से व्यक्तियों को देखा होगा। ओहदे के कारण मान मिलता है, लेकिन हकीकत में कुछ नहीं होता।

४) अकड़ - बहुत ही ज्यादा अहंकार, घमंडी। तीन मील तक चलने की ताकत नहीं होती और कहेगा, “पूरी दुनिया घूम आऊँगा।” बड़ी-बड़ी बातें करता है, सभी को “छिट-छिट” करता रहता है। किसी को भी अपने बराबर मानता ही नहीं! अतिशयोक्ति युक्त बातें करता है। खुद में कोई काबिलीयत नहीं होती, लेकिन अकड़कर घूमता रहता है, जैसे कि बहुत बड़ी हस्ती हो!

ये सारे “मान” के ही स्वरूप हैं - अलग-अलग दृष्टिकोण से।

स्वमान अच्छा - “स्व” की प्राप्ति के बाद मान सहज ही रहता है, इतराता नहीं है। स्वमान तो अच्छा है। सद्गुण हृद में रखते हैं। उन्हें तो संभालना चाहिए वर्ना व्यक्ति बेशर्म बन जाएगा। फिर अहंकार “मानी” बनता जाता है। वह भटकने का मुख्य कारण है। जब कर्तापन का अहंकार टूटेगा तब भगवान प्रकट होंगे - आत्मज्ञान। वर्ना तो अहंकार और गर्वरस से कैफ चढ़ता है। ज्ञान का आवरण कब टूटेगा? जब मोहनीय कर्म पूरा होगा, तब।

“मान” का रक्षक यानी क्रोध। जहाँ मान नहीं मिलता वहाँ तुरंत ही क्रोध आ जाता है और सामने वाले पर अटक कर देते हैं। क्रोध, मान को रक्षण देने वाला है। मान नापने का थर्मामीटर कौन सा है? यदि पंद्रह-बीस रिश्तेदार बैठे हों, और सभी के बीच आपसे कहे कि “आप बेअक्ल हो” देखो असर हो गया न?

तो मान था न? अपमान सहन नहीं कर सके, वह बड़ा मानी।

मान से ही संसार खड़ा है और कर्मों की वंशावली जारी रहती है। शुद्धात्मा की जागृति आते ही मान का विलय हो जाता है। फिर सतही तौर पर रहता है लेकिन उसमें हमारी सहमति नहीं रहती।



मानोमीटर



“ईर्ष्या” अर्थात् दूसरों की खुशियों का अंदाज़ लगाने की कला, अपनी खुशियों की नहीं।

मैं और मेरी एक दोस्त सिमोन, हम मिलकर कॉलेज में एक विद्यार्थी संगठन चलाते हैं। एक दिन हम हमारे संगठन की योजनाओं के बारे में बातें कर रहे थे। सिमोन ने एक बड़ी सर्जनात्मक योजना के बारे में बात की और कहा कि वह खुद इस योजना को चलाएगी। और उसकी अगवानी भी करेगी।

योजना अद्भुत थी, लेकिन मुझे पसंद नहीं आई! वह ऐसी ज़ोरदार योजना लेकर आई, वही मुझ से सहन नहीं हुआ। मुझे मेरी इस नापसंदगी का कारण समझ में नहीं आया फिर भी कॉफी पीते हुए, मैंने योजना के बारे में मेरे नकारात्मक सुझाव रखे कि वह हमारे वार्षिक ध्येय से सुसंगत नहीं है, इससे हमारे साथियों को गलत संदेश पहुँचेगा, यह योजना सफल नहीं हो पाएगी वगैरह-वगैरह।

मेरे मत का सिमोन ने बहुत सुंदर उत्तर दिया और कहा कि, “आयुष, तूने जो कुछ भी कहा, वह सब मैंने ध्यान से सुना, वास्तव में मैंने उन्हें समझने की कोशिश की, लेकिन उनका कोई मतलब नहीं निकला। ये शब्द तुम्हारे हैं, ऐसा मुझे नहीं लगा। मुझे ऐसा लग रहा है कि तुझे मुझ से ईर्ष्या हो रही है!”

ओहोहो... क्या?... कठोर आवाज़ के साथ मैं कुछ पीछे हट गया, वातावरण धूँधला हो गया और समय मानो रुक सा गया।

सिमोन का एक अद्भुत व्यक्तित्व होने के कारण, उसने यह बात खुद को सही साबित करने या सामने वाले व्यक्ति का अपमान करने या किसी पर दोषारोपण की भावना से नहीं कही थी। उसने यह बात

अपने स्वाभाविक अवलोकन से कही थी।

उसकी बात सुनते ही मुझे लगा कि वह सही कह रही है। मैंने अवलोकन किया कि मुझे मेरी ही एक मित्र से ईर्ष्या हो रही है। मैं टेबल पर उसके सामने बैठकर अपने ही अक्षम डर के कारण अपने सर्जनात्मक और महत्वकांक्षी विचारों को दबा रहा था। मैं ऐसा कैसे बन गया था?

लेकिन मेरे अहंकार के कारण मैंने उसे ऐसा कुछ भी नहीं कहा। मुझे ऐसा लगा कि मैं उसको ऐसा कुछ कहूँ कि, “मुझे अफसोस है लेकिन अब मैं तुम्हारे विचारों का समर्थन करूँगा। हम इस विषय पर बाद में चर्चा करके निर्णय लेंगे।”

सिमोन के शब्दों ने मेरे जीवनपथ को बदल दिया था। मैं विचारों से घिरा हुआ घर पहुँचा, “ऐसा क्यों हुआ? मैं अपने खुद के आनंद से इतना दूर कैसे हो गया? मैं ऐसा कैसे हो गया कि मेरे ही किसी प्रियजन के विकास को मैं सह नहीं पाया?”

मैं अपने आप से अलग पड़ गया था और अध्यात्म से दूर हो गया था। इस आँधी-तूफान जैसे कठिन वर्ष में घटित सभी घटनाओं से मैं भावुकतावश घायल हो गया था। तदुपरांत अध्यात्म और संवेदना के संपर्क में नहीं रहने के कारण खुश रहने के लिए मैं ज्यादा खाने लगा और ज्यादा खाते रहना मेरी कमज़ोरी बन चुकी थी।

परिणाम स्वरूप प्रमाद ने मुझे घेर लिया और आत्मजागृति न के बराबर रह गई। सिमोन की बातों के कारण मेरी दृष्टि मेरे प्रमाद पर पड़ी। जब मैं घर पहुँचा

तब मेरी समझ में स्पष्ट आ गया कि मैं ऐसी मनःस्थिति पर पहुँच चुका हूँ कि जिसके लिए (सिमोन के लिए) मुझे मान है और वह ऐसी योजना को साकार करने की इच्छा दर्शाती है जो कि मेरे ध्येय के अनुरूप है, फिर भी मैं उसे सपोर्ट नहीं कर रहा। ऐसे तो परिस्थिति बहुत बिगड़ जाएगी। ऐसा सोचने से तो मैं अपने सपनों को साकार करने के, सही रास्ते पर चलने के और खुश रहने के मार्ग से कितना दूर चला जाऊँगा!

मेरी समझ में आ गया था कि, दूसरों की कुशलता, सर्जनात्मकता, महत्वाकांक्षा को अपनाने की और सहकार देने की हमारी क्षमता से ही हमारी स्वयं की महत्वाकांक्षा और सर्जनात्मकता को हम कितना समर्थन देते हैं।

जब-जब मेरे मन में प्रश्न उठते हैं तब-तब मैं <http://youth.dadabhagwan.org> विज़िट करता हूँ जिससे मुझे बहुत आनंद आता है। अभी मुझे आपसुत्र के साथ का एक छोटा संवाद मिला...।

प्रश्न - हमें ईर्ष्या क्यों होती है?

आसुत्र - आपको जो “मान” चाहिए, वह अगर किसी और को मिले, तो आपको उससे ईर्ष्या होती है।

प्रश्न - हमें पैसों की इतनी तीव्र इच्छा क्यों होती है?

आसुत्र - उससे आपको “इज्जत” (स्टेटस) मिलती है और लोग आपके साथ मानपूर्वक व्यवहार करते हैं।

प्रश्न - हम किसी का अपमान क्यों करते हैं, या किसी का मज़ाक क्यों उड़ाते हैं?

आसुत्र - अपने “मान” की भीख के कारण हम दूसरे का अपमान कर देते हैं। हमें ऐसा लगता है कि दूसरे का अपमान करके हम उसे नीचा दिखाएँगे और ऐसा करने से हम अपने आप अच्छे दिखेंगे।

प्रश्न - जब कोई हमारा अपमान करे तब कैसा लगता है?

आसुत्र - जब कोई हमारा अपमान करे, तब सब के सामने हमारी बेइज्जती होने से, हमारी “मान” की भीख और बढ़ती है।

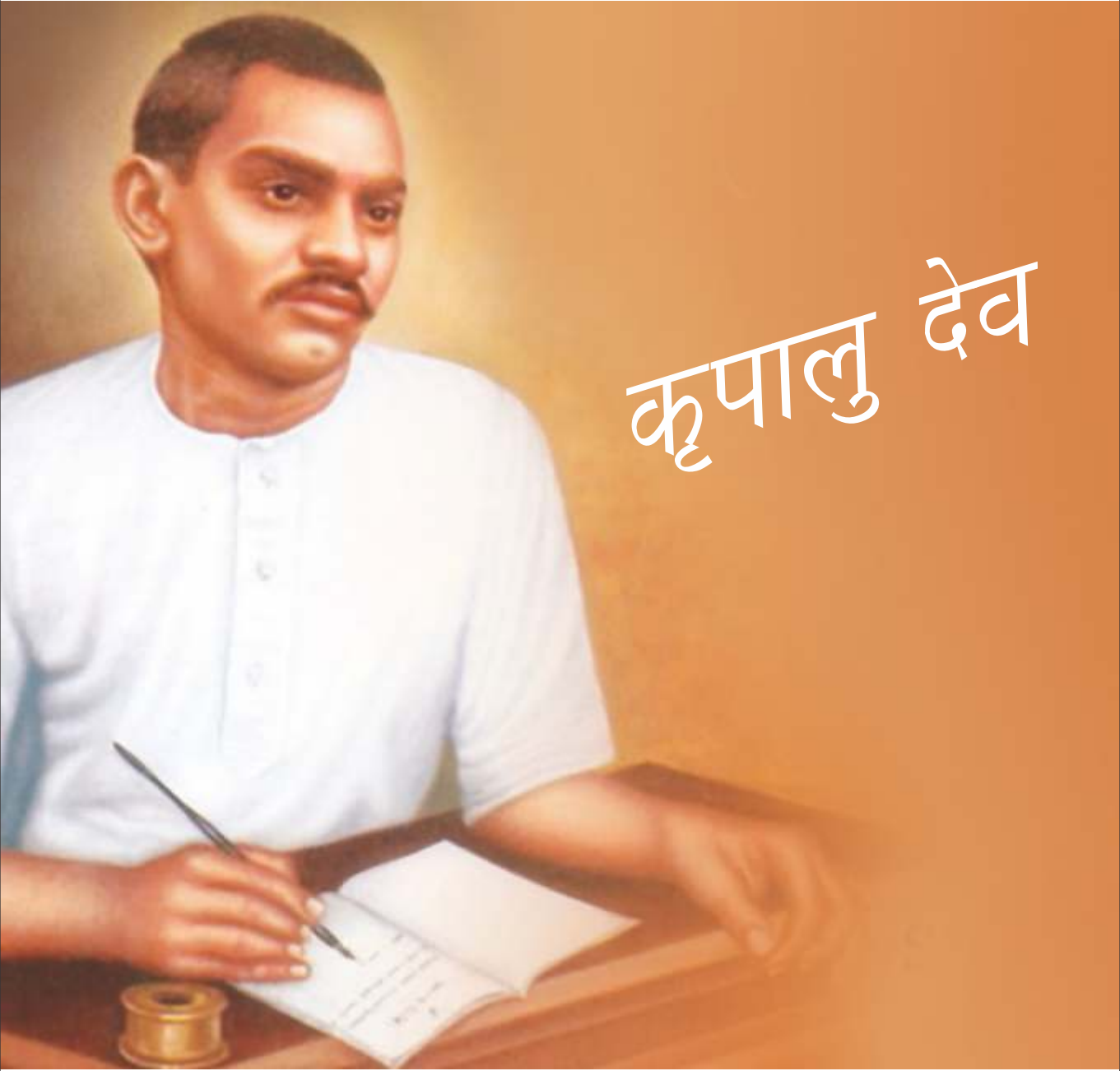
अवगुणों के बहुत से कारण होते हैं। आंतरिक कषाय-मान इसका सब से बड़ा कारण है।

यह संवाद पढ़ने के बाद मुझे लगा कि मेरी ईर्ष्या का कारण “मान-कषाय” ही है।

उसके बाद से ही मैंने स्वयं को बदलना शुरू कर दिया। मैंने अपनी टकराव की आदत को त्याग दिया। मैंने तय किया कि परिस्थिति बदलनी ही चाहिए। मैं फिर से अपनी ओर मुड़ गया। मैंने स्वयं को विराम देना शुरू कर दिया। मैंने अपने सपनों और महत्वाकांक्षाओं को याद करने के लिए, मनन और चिंतन करने के लिए समय निकालना शुरू कर दिया।

प्रोजेक्ट को आगे बढ़ाने के लिए मैंने सिमोन की सहायता की। मैंने दृढ़ निश्चय किया कि मेरा “मान-कषाय” मेरे मित्र, परिवारजनों और शिक्षकों के संबंध के बीच कभी भी नहीं आएगा।

महान पुरुषों की झांकियाँ



कृपालु देव

कृपालु देव ने लिखा है कि,

“जगत् में अगर मान नहीं होता तो यहीं मोक्ष होता।”

संसार में हर जगह मान ही मान नज़र आता है। खाते-पीते, उठते-बैठते जीव मान के साथ घूमता है। अगर वह सोचे कि, “मैंने क्या किया? अभिमान करने जैसा कुछ भी नहीं किया है?” लेकिन विभाव और अहमभाव के कारण ऐसे विचार नहीं आते। सही ग्रहण नहीं कर पाते, मैं कौन हूँ? कहाँ से आया? मेरा वास्तविक स्वरूप क्या है? जीव को ऐसे विचार ही नहीं आते। ज्ञानीपुरुषों के वचनों से ऐसी मान्यता बैठ जाती है। “आत्मा है”, “वह नित्य है”, “निजकर्म है कर्ता”, “भोक्ता है”, “और मोक्ष है”, “मोक्ष उपाय सुधर्म”। ये छः चीज़ें समकित की नींव हैं। ज्ञानीपुरुष के आश्रय से मोक्ष मार्ग सीधा (सरल) है। जब तक “मैं जानता हूँ” वह नहीं जाएगा, तब तक हल नहीं आएगा। “रोके जीव स्वच्छंद तो पाए अवश्य मोक्ष...”, “और कुछ मत खोज, सिर्फ एक सत्पुरुष को खोजकर उनके चरणकमल में सर्वभाव अर्पण कर, फिर अगर मोक्ष न मिले तो मुझ से लेना।” - यह वाक्य मुमुक्षु को भरोसा दिलाता है, एक प्रकार का विश्वास दिलाता है। प्रत्यक्ष सद्गुरु योग से ही स्वच्छंद रुक सकता है। हम अगर देखें तो भगवान महावीर को कैसे-कैसे मान, अपमान वगैरह मिले थे! वे राजा थे, वैभवी सुख थे, फिर भी उनकी भावना छूटने की थी। वैभव और सबकुछ छोड़कर निकल पड़े, फिर भी उन पर दुःख पड़े। गोशाला ने और देवों ने बहुत उपसर्ग किए, लेकिन इन सभी में भगवान “आत्मा में स्थिर” रहे। समभाव ही मोक्ष है। “छूटे देहाध्यास तो नहीं कर्ता तू कर्म का।” - इस देह को अपना मान लिया है और उसका “मान” रखने के लिए ही अपमान या दुःखों से भगाता रहता है। उस पर मोह और ममत्व छा जाता है। वही मोक्ष के लिए बंधनकर्ता है। सद्गुरु की प्रतीति चाहिए। “सेवे सद्गुरु चरण को” देह का ममत्व जाने से फिर से देह प्राप्त नहीं होगा। देहभाव छूटने से आत्मज्ञान होगा।

“आत्म भावना भावता जीव लहे केवळज्ञान।”

ज्ञानी की यथार्थ प्रतीति जिसे हो गई है उसका मोक्ष तो होने ही वाला है। “कोटि वर्षनु स्वप्न पण जागृत थतां शमाय” - ऐसे अनंत जन्मों के कर्म ज्ञानीपुरुष के ज्ञान से जलकर राख हो जाते हैं।

Q and A

प्रश्नकर्ता - जगत् कल्याण करने की भावना करते हुए मान से प्योर कैसे रह सकते हैं?

जवाब - दावा कहते हैं न, यहाँ तो क्रोध-मान-माया-लोभ समाप्त करने हैं। ज्ञान मिलने के बाद हमें क्रोध-मान-माया-लोभ उत्पन्न ही नहीं होते। सारा डिस्चार्ज माल है। ज्ञानीपुरुष किसे कहते हैं? कि जिसे विषय की भीख न हो, पैसों की भीख न हो, मान की भीख न हो और शिष्यों की भीख न हो, जब ऐसी कोई भीख न हो तब वह ज्ञानीपुरुष कहलाता है। और संतपुरुष किसे कहते हैं? पैसों की भीख न हो, विषय की भीख न हो लेकिन थोड़ी-बहुत मान की भीख रहती है। जबकि ज्ञानीपुरुष को तो मान की भीख भी नहीं रहती। अपनी इस संस्था में मान का लेन-देन तो है ही नहीं। मान देकर मान लेना, वह सिस्टम ही नहीं है। यहाँ “मान” एक कषाय कहलाता है। क्रोध-मान-माया-लोभ, इन कषायों को यहाँ पोषण नहीं देना है बल्कि उन्हें समाप्त करना है। यहाँ आपको मान कषाय नहीं मिलेगा। कहीं पर आपने चाहे जितना भी अच्छा काम किया होगा लेकिन आपको स्टेज पर बुलाकर वाह-वाह नहीं करेंगे। सब आपको मान नहीं देंगे। हाँ, अप्रीशिएट ज़रूर करेंगे कि बहुत अच्छा काम किया, लेकिन मान नहीं देंगे। मान देंगे तो व्यक्ति इतराएगा और इतराने से कषाय (मान) बढ़ेगा और बढ़ेगा तो खुद को खत्म कर देगा। इसलिए अपने यहाँ चाहे जितना भी दान दें, या फिर भाव हो कि चलो हम ज्ञान के लिए दान दें, तो कभी भी उसकी तख्ती नहीं लगाते, कभी भी उस व्यक्ति वाह-वाह नहीं करते और कभी भी उन्हें सब के सामने नहीं बुलाते कि उन्होंने इतने पैसे दिए हैं। यहाँ पर अगर कोई दान देता भी है तो वास्तव में अपने लोभ को तोड़ने के लिए देता है, मान खाने के लिए नहीं देता। अतः कहीं भी देखोगे तो तख्ती नहीं मिलेगी।

आपकी मनपसंद मैगज़ीन अब से हर
महीने हिन्दी भाषा में भी उपलब्ध है।



अब से आप youth.dadabhagwan.org और Dada Bhagwan App पर
से भी अक्रम यूथ की हिन्दी आवृत्ति ले सकते हैं...

अक्रम यूथ

११



ज्ञानी विद यूथ

प्रश्नकर्ता : जीवन में जब बहुत मान मिले तब कैसी समझ रखने से हमें समता रहेगी? और अपमान के समय समता कैसे रखें?

पूज्यश्री : सयाने लोग क्या कहेंगे? “भाई, आप यह मान की गठरी मुझे दे रहे हैं लेकिन मेरे साथ ये सात लोग भी थे, मैं अकेला नहीं था।” सब में बाँट देता है। जैसे अंबाजी का प्रसाद सभी को थोड़ा-थोड़ा बाँट देते हैं और अंत में थोड़ा सा खुद खाते हैं, सयाने लोग ऐसा करते हैं। और हम तो यो मुँह फाड़कर बैठे रहते हैं, दूसरे की क्रेडिट भी खुद ले लेते हैं।

प्रश्नकर्ता : हाँ, ऐसा ही हो जाता है।

पूज्यश्री : लो, वैसे कहेंगे “कि मुझे क्रेडिट नहीं चाहिए” लेकिन सामने से मिला इसलिए आराम से खा गया। दूसरे सब भूखे रह गए, वे बेचारे देखते रहते हैं, “इसने कुछ भी नहीं किया और क्रेडिट ले गया। दूसरी बार तुझे देख लेंगे!”

प्रश्नकर्ता : फिर उसका रिपेमेंट आएगा न?

पूज्यश्री : फिर जब कभी हमने सब से अच्छा काम किया हो न तब क्रेडिट कोई और ले जाता है। तब हम दुःखी हो जाते हैं। कुदरत कहती है मान दूसरे को दो। काम बिगड़ जाए तो अपने सिर पर ले लेना चाहिए और कहना चाहिए कि मेरी गलती है, डिपार्टमेंट में मेरी गलती की वजह से ऐसा हो गया

है। काम अच्छा हो तो डिपार्टमेंट के सारे व्यक्तियों की मेहनत और कुशलता है, उन लोगों ने हेल्प की इसलिए बेस्ट हुआ है। ऐसा ठीक है या नहीं?

प्रश्नकर्ता : ठीक है।

पूज्यश्री : ऐसा सेट कर लेना है। मान में अगर रुचि नहीं रहेगी तो अपमान के दुःख बहुत कम असर करेंगे। यह तो मान के सुख लेते हैं न इसलिए अपमान के दुःख भुगतने पड़ते हैं। हमारा ही कर्म निमित्त के द्वारा हमें फल देता है। किसका दोष निकालेंगे?

अपमान अगर ज्ञान से साफ (चोखे) करते जाएँगे तो धीर-धीरे मान पचाने की शक्ति भी आएगी। अतः अपमान को ही जीतना है, क्योंकि अपमान में वास्तव में मान चखने वाला अहंकार ही है। अपमान के समय बहुत कड़वाहट भुगतता है। अपमान का दुःख ज्ञान से जैसे-जैसे विलय करते जाएँगे, तो शक्ति बढ़ेगी। अब हमारी कार्य कुशलता बढ़ गई इसलिए ये लोग हमें मान दे रहे हैं। अरे, कुशलता नहीं, पुण्य का उदय होगा तो लोग वाह-वाह करेंगे और पुण्य खत्म हो जाने से तो लोग बेइज्जत करेंगे। इसलिए पुण्य-पाप के हिसाब में हम क्यों सुखी या दुःखी रहें?

चापलूसी

अहमदाबाद के एक मध्यम वर्गीय परिवार का सुविध आज बहुत खुश है। IAS अफसर बन गया है। हाँ, यों तो अहमदाबाद, मम्मी-पापा, दोस्तों, सब से दूर मुंबई जाना पड़ेगा लेकिन कैसी पदवी मिली है, वह तो देखो! असिस्टेंट डायरेक्टर जनरल ऑफ फॉरेन ट्रेड। कुछ साल पहले से ही सुविध के बड़े भैया अपनी पत्नी और बच्चे के साथ मुंबई सेट हो चुके हैं। गवर्नमेन्ट क्वार्टर के बजाय अपने साथ रहने के लिए भैया-भाभी ने बहुत आग्रह किया इसलिए सुविध भैया-भाभी और प्यारे भतीजे जैनम के साथ रहने लगा।

सरकार की ओर से गाड़ी, अच्छी पगार और दूसरी अनेक सुविधाएँ मिलने के कारण सुविध बहुत खुश था। माया नगरी में आकर सुविध अब “साहब” बन गया था। उसके ऑफिस एवं घर पर कभी-कभार भेंट-सौगातें पहुँच जाती थीं। भैया-भाभी के साथ बाहर खाना खाने या खरीदारी के लिए जाते तो रेस्टोरेन्ट और शो-रूम के मालिक, मैनेजर वगैरह तुरंत आव-भगत के लिए तत्पर रहते। भैया-भाभी की शादी की सालगिरह पर उन्हें उपहार देने के लिए जब सुविध ने प्रसिद्ध ज्वेलर्स त्रिलोकचंद्र को फोन करके हीरे की अंगूठियों के सुंदर डिज़ाइन निकालकर रखने के लिए कहा तब वहाँ के मालिक

त्रिलोक सेठ ने, “इन्हें खुश रखूँगा तो ये मेरा इन्कम टैक्स का काम कर देंगे।” ऐसा सोचकर “वे खुद गहने लेकर उनके घर दिखाने के लिए आएँगे”, ऐसा कहा। शहर के इतने बड़े सुनार को खुद गहने दिखाने के लिए घर पर आया देखकर, आसपास के लोगों में सुविध का स्टेटस् चर्चा का विषय बन गया। देवर की ओर से इतना महंगा उपहार मिलने से भाभी और इन्कम टैक्स के लिए सुविध की ओर से सकारात्मक प्रतिभाव मिलने से सुनार भी खुश हो जाते हैं। वे जैनम के लिए भी एक अंगूठी उपहार में दे जाते हैं। बड़े-बड़े उद्योगपतियों की पार्टी में जाना और अन्य विविध कार्यक्रमों में हिस्सा लेना, ये सब तो अब सामान्य सी बात हो गई थी।

रविवार की सुबह चाय-नाश्ता करते हुए, मम्मी-पापा को मुंबई बुला लेने की चर्चा सब कर रहे थे, तभी डोरबेल बजती है। सुविध दरवाज़ा खोलता है, वहाँ एक लड़का खड़ा होता है, कहता है, “अंकल, जैनम है?” “हाँ है न, अंदर आओ।” कहकर सुविध जैनम को बुलाता है। जैनम, स्वराज को देखकर चौंक जाता है, “स्वराज! तू अंदर आ जा।” स्वराज अंदर आने के लिए मना करता हुआ कहता है, “यार जैनम, तू कितना होशियार है! मुझे तेरी मदद चाहिए।” जैनम आश्चर्य से, “मेरी मदद?”, “हाँ दोस्त, तू गणित का



इक्का है। लेकिन मुझे तेरी तरह अच्छा गणित नहीं आता। अगले साल से तू मुझे सिखाएगा? अब से आप मेरे सर, “जैनम सर”।” “सर” सुनकर जैनम को अच्छा लगा, वह मुस्कुराया। तभी स्वराज ने कहा, “लेकिन यह तो अगले साल की बात हुई, लेकिन दो दिनों में परिक्षाएँ शुरू होगी, उसका क्या? देख, तेरा रोल नंबर दस है और मेरा ग्यारह। तो इस बार गणित की परीक्षा में तू मेरी मदद करेगा? मुझे जवाब दिखाएगा, मेरे भाई?” और जैनम उसे “हाँ” कहता है। खुश होकर स्वराज चला जाता है। भैया-भाभी और सुविध ने उन दोनों की बातें सुन ली थी। भाभी ने तुरंत ही जैनम से पूछा, “तूने उसे “हाँ” क्यों कहा?” “अरे मम्मी, वोट्स द विग डील? वाद में तो मैं उसका “सर” बन जाऊँगा तब सीखा दूँगा।” तभी भैया ने कहा, “देखो बेटे, कोई अपना काम निकलवाने के लिए इस तरह अच्छी-अच्छी बातें कहे

तो उसकी बातों में नहीं आना चाहिए। तुझे पता है कि चोरी करने में मदद करना भी चोरी करने के बराबर ही है। क्या तू ऐसा करेगा?” “नहीं, पापा कभी भी नहीं। मैं अभी उसे मना कर देता हूँ।” कहते ही जैनम दरवाज़े की ओर भागा। जैनम को जाता हुआ देखकर हँसकर भैया ने कहा, “जैसा चाचा वैसा भतीजा।” सुविध को बड़ा अजीब सा लगा, उसने भैया से पूछा, “क्यों भैया, ऐसा क्यों कहा? मैं भी बचपन में ऐसा करता था, क्या?” “बचपन का तो मुझे याद नहीं है लेकिन...”, कहते हुए भैया रुक जाते हैं। “भैया प्लीज़, कहो न, ऐसा क्यों कहा?” सुविध भैया से बहुत आग्रह करता है। भैया कहते हैं, “देख सुविध, तू मेरा छोटा भाई है, तू जीवन में आगे बढ़े, उससे मुझे खुशी होगी! लेकिन जब से तुझे यह पदवी मिली है तब से तुझे मान का रंग लग गया है। तुझे ऐसा लगता है कि

सब तुझे मान दे रहे हैं, लेकिन क्या वे लोग तेरे विचारों को या आचरण को मान दे रहे हैं? नहीं भाई। तेरे ओहदे को मान दे रहे हैं, जिसके जोर पर तूने झवेरी (सुनार) और अन्य कितने ही ऐसे लोगों के काले कामों को छुपा रखा है। सिर्फ अपने स्वार्थ के कारण वे लोग तेरे आगे-पीछे घूमते हैं। तू समझ रहा है न, भाई?" सुविध ने कहा, "हाँ, भैया।" बड़े भैया बात को आगे बढ़ाते हुए कहते हैं, "पदवी/ओहदे का उपयोग समाज और देश के भले के लिए करना चाहिए, उसका दुरुपयोग कैसे कर सकते हैं?"

तुझे पता है, दादाश्री इस बारे में क्या कहते हैं?...





ज्ञानी की वैज्ञानिक दृष्टि से...

ये गाय-भैंस हमारी ओर देखती रहें, सारी गाय हमारी ओर देखती रहें और फिर कान हिलाएँ तो क्या हमें ऐसा समझना चाहिए कि वे हमें मान दे रही हैं! ऐसा है, यह सब। हम मन में मान लेते हैं कि ये सब लोग हमें मान से देख रहे हैं! वे बेचारे तो सब अपने-अपने दुःख से दुःखी हैं, अपनी-अपनी चिंता में हैं। वे क्या आपके लिए बैठे हैं? निडूले हैं? सब अपनी-अपनी चिंता में घूम रहे हैं।

चार-चार गाड़ियाँ घर के सामने रोज़ खड़ी रहती हैं। “मामा की पोल” (दादाश्री का घर) में पंद्रह रुपए का भाड़ा, संस्कारी गली। आज से पैंतालीस साल पहले लोग बंगले में कहाँ रहते थे? “मामा की पोल” बहुत उत्तम मानी जाती थी। तब हम “मामा की पोल” में रहते थे और पंद्रह रुपए भाड़ा था। तब तो लोग सात रुपए के भाड़े में भी रहते थे, हम पंद्रह रुपए में। यों तो बड़े कन्ट्रैक्टर कहलाते थे इसलिए बंगले में रहने वाले गाड़ियाँ लेकर “मामा की पोल” में आते थे। क्योंकि मुसीबत में फँसे रहते थे। उल्टा-सीधा (काम) करके आए रहते थे, फिर भी उन्हें “पिछले-दरवाज़े” से निकाल देता था। “पिछला दरवाज़ा” दिखा देता कि यहाँ से निकल जाओ। अब गुनाह वह करता और मैं “पिछले दरवाज़े” से छुड़वाता था। यानी गुनाह अपने पर ले लेता था, क्यों? मान खाने के लिए! पिछले दरवाज़े से निकाल देना गुनाह नहीं है क्या? यों अक्ल से दिखा देता था फिर, इसलिए वे बच जाते थे। फिर वे हमें मान से रखते, लेकिन गुनाह हमें लगता। बाद में समझ में आया कि बेभानपने से ये सारे गुनाह किए, मान खाने के लिए, फिर मान पकड़ में आया। तब चिंता होने लगी मान की!

अपमान - सफलता की सीढ़ी के तौर पर



रतन टाटा

“महान” शब्द, वह “साधारण लोग” और “महान लोग” के बीच का अंतर दिखाने वाला सिर्फ शब्द ही नहीं है... कैसे?... इस कहानी से हमें उसका कारण समझ में आएगा।

टाटा ग्रुप भारत के औद्योगिक गुप्तों में से एक बड़ा गुप्त है। औद्योगिक साहस के साथ ही उद्योगों में नैतिक मूल्यों का पालन करने के लिए भी वह जाना जाता है।

रतन टाटा एक ऐसे व्यक्ति हैं, जिन्होंने भारत की सब से ज्यादा विश्वसनीय उद्योग की परंपरा को संभालकर रखा है।

जब किसी का अपमान हो तब उन्हें गुस्सा आना स्वाभाविक है और महान व्यक्ति इस गुस्से का उपयोग अपनी औद्योगिक नीतियों,

योजनाओं और ध्येय को तय करने के लिए करते हैं। टाटा ग्रुप की पहली पैसन्जर कार, टाटा इन्डिका १९९८ में मार्केट में आई। उस समय रतन टाटा, टाटा ग्रुप का नेतृत्व करते थे और पैसन्जर कार के उद्योग का निर्णय भी उनका था।

पहले साल टाटा इन्डिका कार को असफलता मिली और पैसन्जर कार का उद्योग असफल होता दिखा। काफी लोगों ने रतन टाटा को यह पैसन्जर कार का व्यवसाय बेच देने की सलाह दी। रतन टाटा को यह विचार योग्य लगा और टाटा इन्डिका को पसंद करने वाली फोर्ड मोटर कंपनी को इसका प्रस्ताव भेजा। इस बारे में चर्चा के लिए रतन टाटा और उनकी टीम डीट्रोइट पहुँची। डीट्रोइट, फोर्ड का हेड क्वार्टर (मुख्य मथक) है और अमरीका के ऑटोमोबाइल उद्योग का महत्वपूर्ण सेन्टर माना जाता है।

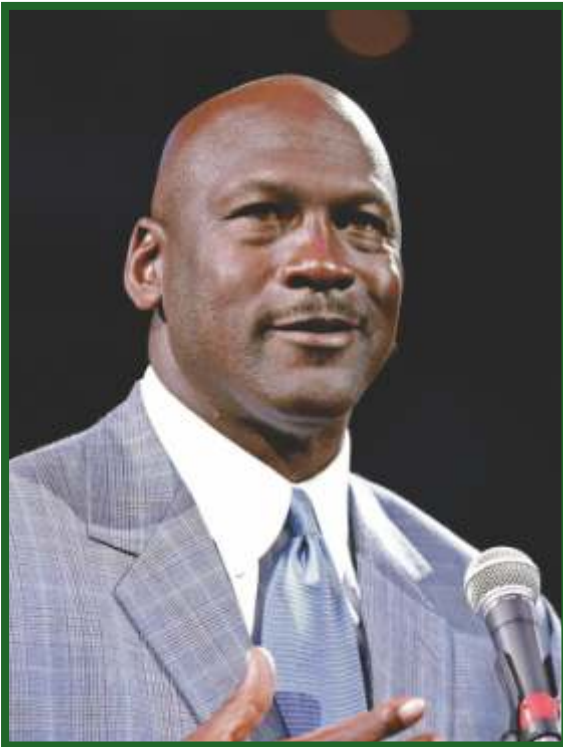
तीन घंटे की मीटिंग के दौरान फोर्ड के सदस्यों का व्यवहार, टाटा के प्रतिनिधियों के प्रति अपमानजनक लगा। मीटिंग में फोर्ड के चेयरमैन बिल फोर्ड ने रतन टाटा से कहा, “पैसन्जर कार के बिज़नेस के बारे में

आप कुछ भी नहीं जानते थे, फिर भी आपने क्यों शुरू किया? अगर हम यह व्यवसाय खरीद लेंगे तो आप पर उपकार करेंगे।” रतन टाटा ने लौटने का निर्णय कर लिया। अपमानित होने के कारण सफर के दौरान टाटा बहुत व्यग्र और विचारमग्न थे।

शुरुआत की असफलता के बाद, टाटा मोटर्स ने पैसन्जर कार का अच्छा व्यापार किया, जबकि उसी दौरान बिल फोर्ड का व्यापार बहुत खराब था। जेगुआर-लैंड रोवर से फोर्ड को भारी नुकसान हुआ था। २००८ में जब फोर्ड कंपनी की स्थिति बहुत खराब थी, तब टाटा ग्रुप ने फोर्ड को उनकी लक्ज़री कार का ब्रांड जेगुआर-लैंड रोवर खरीदने का प्रस्ताव दिया। बिल फोर्ड, अपनी टीम के साथ “बोम्बे हाऊस” पहुँचे। मुंबई का “बोम्बे हाऊस” टाटा ग्रुप का हेड क्वार्टर है। यह सौदा GE २.३ बिलियन में तय हुआ, भारत में उस समय इसकी कीमत ९३०० करोड़ रुपए थी।

मीटिंग में बिल फोर्ड ने रतन टाटा से कहा, “जेगुआर-लैंड रोवर खरीदकर आपने हम पर बहुत बड़ा उपकार किया है।”

जेगुआर-लैंड रोवर के अधिकार अब टाटा ग्रुप के पास हैं और हाल ही में उसे फायदा हो रहा है।



माइकल जॉर्डन

असफलता की रूपरेखा

१९७८ में कॉलेज के दूसरे वर्ष में पढ़ते हुए माइकल जॉर्डन ने “लेनी” हाइस्कूल की “वर्सिटी” यूनिवर्सिटी में बास्केट बॉल टीम में स्थान पाने के लिए बहुत मेहनत की, लेकिन जब सूचि (लिस्ट) निकली तब उसमें जॉर्डन का नाम नहीं था। उसे वर्सिटी (यूनिवर्सिटी) की जूनियर टीम में खेलने की तैयारी करने के लिए कहा गया।

कोच की दृष्टि से दूसरे वर्ष में पढ़ने वाले जॉर्डन को जूनियर वर्सिटी टीम में लेना तार्किक था, लेकिन जब इस टीम के प्लेयर्स की लिस्ट निकली तब उसमें भी जॉर्डन का नाम नहीं था। पंद्रह साल का जॉर्डन हताश हो गया और उसके लिए यह सब से

बड़ी हार और असफलता थी। “मैं अपने कमरे में जाकर, दरवाज़ा बंद करके रोने लगा। मैं अपने आँसू रोक नहीं पाया। उस समय घर में और कोई भी नहीं था फिर भी मैंने कमरे का दरवाज़ा बंद ही रखा, क्योंकि कोई मुझे सुन नहीं ले या देख न ले।” जॉर्डन का दिल टूट गया था और अगर उसकी माँ ने उसे नहीं समझाया होता तो हमेशा के लिए स्पोर्ट्स छोड़ने के लिए तैयार था।

अपनी असफलता से निकलने के लिए जॉर्डन ने वही किया जो कि एक चैम्पियन करता है। अपनी असफलता और हताशा का उपयोग उसने स्वयं को निखारने में किया। जूनियर वर्सिटी टीम में उसे चुना गया और उसने बहुत मेहनत की। “जब-जब मैं वर्क आउट (अभ्यास/प्रेक्टिस) करके थक जाता और आराम करने की सोचता, तब मैं अपनी आँखें बंद करके देखता कि लोकर रूम में लिस्ट है और उसमें मेरा नाम ही नहीं है! और ऐसा सोचते ही मैं फिर से प्रेक्टिस करने लग जाता।”

जॉर्डन के जीवन का यह क्रम बन गया था कि, वह जीवन में आने वाली हताशा और विघ्नों के परिणाम स्वरूप में दोगुने प्रयत्न करता था। उसके हाइस्कूल का प्रतिस्पर्धी खिलाड़ी केनी गेटीसन, जिसने हाइस्कूल स्टेट चैम्पियनशिप में अपनी टीम का नेतृत्व करके, जॉर्डन की टीम को हराया था। उसने ऐसा कहा था कि, “आपको समझना चाहिए कि उसे शक्ति कहाँ से मिलती है? कौन सी चीज़ उसे श्रेष्ठ बनाती है? ज्यादातर लोगों के लिए हार का दुःख क्षणिक होता है, जबकि जॉर्डन हार को गंभीरता से लेकर उसे ताज़ा रखता है। क्योंकि आज वह जो कुछ है वह उसकी दृढ़ इच्छाशक्ति का ही परिणाम है।”

हार के बाद सफलता का क्रम यूनिवर्सिटी ऑफ नोर्थ कैरोलीना और फिर **NBA** तक जॉर्डन के साथ रहा। निरंतर मेहनत के फलस्वरूप उसने अनेक रिकॉर्ड्स तोड़ डाले और **NBA** के इतिहास में सब से ज्यादा ट्रॉफी और सम्मान प्राप्त करने वाला खिलाड़ी बना। बास्केट बॉल के खेल को अमरीका में और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर ज़बरदस्त प्रसिद्धि दिलाने का श्रेय भी उसी को जाता है। बास्केट बॉल के क्षेत्र में नई पीढ़ी के लिए वह प्रेरणारूप बन गया, जिसमें लेब्रोन जेम्स, हवान वेड और कोबे ब्रीयेन्त शामिल हैं। “चैम्पियन” शब्द की कल्पना माइकल जोर्डन को याद किए बगैर नहीं कर सकते। “असफलता वह सफलता की पहली सीढ़ी है।” इस वाक्य की यथार्थता दर्शाने वाला श्रेष्ठ उदाहरण माइकल जोर्डन के अलावा और कोई नहीं हो सकता।

युव 2017

१७ से २१ साल के
युवा भाइयों के लिए

१८ से २२ जून,
अमरेली त्रिमंदिर पर...

युवाओं की आध्यात्मिक प्रगति
के लिए आनंद-उल्लास के
साथ होती है शिविर...

पद भक्ति, प्रक्षाल, गरबा, कई खेल और प्रवृत्तियाँ,
आप्तसंकुल के भाइयों के साथ सत्संग

तो आज ही रजिस्ट्रेशन कराएँ : youth.dadabhagwan.org
ज्यादा जानकारी के लिए संपर्क करें - ८१५५००७४८०



अक्रम यूथ

२१

चलेन्ज

एक डॉक्टर थे...
हमेशा खुश रहते...
एक बार एक दोस्त ने उनसे सवाल किया
कि तू हर एक संयोग
में इतना खुश कैसे रह लेता है?
डॉक्टर ने कहा कि, मेरी दवाई ने
मुझे ज़िंदगी जीना सिखाया है!
दवाई खाकर नहीं बल्कि
दवाई के तात्पर्य को समझकर!
डॉक्टर ने मतलब समझाया कि, हमारे मुँह में चॉकलेट हो
तो हम चूसते रहते हैं और अगर
दवाई की कड़वी गोली हो
तो झट से गले से नीचे उतार देते हैं...
बस ज़िंदगी का भी ऐसा ही दस्तूर है!
अपमान करें तो गले से नीचे उतार देना
और मान दें तो चूसते रहना है...!

यदि आप अपने जीवन में सफलतापूर्वक अपमान से बाहर निकल गए हों तो
ऐसे अनुभव नीचे दिए गए पते पर भेज दें।

 **Email** - akramyouth@dadabhagwan.org

 **Facebook** - <http://facebook.com/akramyouth.mag>

 **Twitter** - @AkramYouth

चलो खेलें

दिए गए वाक्यों में से नीचे रेखांकन किए गए शब्दों को नीचे दिए गए टेबल में ढूँढिए।

- १) मान "मैं कुछ हूँ" के स्वरूप में रहता है।
- २) ज़रूरत से ज्यादा मान (अहंकार), वह अभिमान है।
- ३) मान की अपेक्षा से व्यग्रता होती है।
- ४) मान की ज्यादा अपेक्षा रखना, वह भीख में आता है।
- ५) मान की भीख व्यक्ति को आध्यात्मिक मार्ग से दूर कर देती है।
- ६) गर्वरस चखने से जागृति कम हो जाती है।
- ७) जब मनुष्य में मान का कैफ चढ़ा रहता है तब वह बदसूरत लगता है।
- ८) अहंकार तभी खड़ा होता है, जब मनुष्य दूसरे को खुद से निम्न मानता है।
- ९) त्रागु, वह अत्यंत तीव्र दूराग्रह है।
- १०) क्रोध, वह मान का पोषक है।
- ११) "मैं कुछ हूँ" के आवरण के कारण व्यक्ति दूसरों का तिरस्कार करने लगता है।
- १२) आपकी मान की भीख के परिणाम स्वरूप ही आपको अपमान भी भुगतना पड़ता है।
- १३) आपकी काबिलीयत की वजह से लोग आपकी तारीफ (प्रशंसा) नहीं करते, बल्कि आपके पुण्य के उदय के परिणाम स्वरूप आपकी तारीफ करते हैं।
- १४) मान, वह एक कषाय है।
- १५) मान चखने में कोई हर्ज नहीं है, लेकिन मान देने वाले व्यक्ति के प्रति राग नहीं होना चाहिए।

आ	मा	न	मा	ध्य	ता	व्य	से	पु	ण्य
र	गृ	र्ग	क	त्मि	हो	ति	र	स्का	र
अ	जा	से	ता	ग्र	व्य	ग	जा	स्व	के
पे	दे	र	दू	अ	प	मा	न	गृ	रू
क्षा	ती	अ	आ	को	भी	व	अ	प	ति
ग	दू	ब	भि	व्य	ती	ख	हं	ज़	में
र्व	रा	द	ता	मा	ज्य	भि	ध	क्रो	र
क	ग्र	सू	आ	द	न	की	दा	द्व	ह
षा	ह	र	में	ख	म्न	अ	रा	ग	ता
य	च	त	ना	नि	पे	क्षा	ज्य	से	है

मई २०१७

वर्ष : ५, अंक : १

अखंड क्रमांक : ४९

अक्रम यूथ

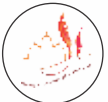
बे घड़ी आजकं

बेटा - मम्मी मुझे ६:०० बजे उठा देना।

मम्मी - ५:३० बजे, बेटा उठ जा... ६:०० बज गए। ५:४० बजे, बेटा उठ जा... ६:०० बज गए। ५:५० बजे, बेटा उठ जा... ६:०० बज गए। ६:०० बजे, बेटा उठ जा ७:०० बज गए।

शांता - मेरे हज़बेन्ड के हार्ट का ऑपरेशन करवाना है। अपोलो हॉस्पिटल कैसा है?

कांता - बेकार है। वहाँ की कैन्टीन में पंजाबी डिश बिल्कुल बेकार है और चाइनीज़ तो मिलता ही नहीं है।



Send your suggestions and feedback at : akramyouth@dadabhagwan.org

Printed and Published by Dimple Mehta on behalf of Mahavideh Foundation-Owner.

Printed at : Amba Offset, B-99, K6 Road, Electronics GIDC, Sector 25, Gandhinagar - 382044, Gujarat, India

